अक्टूबर 2019

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 तृतीय अंक

इस अंक में...

5 अभिव्यक्ति में यथा सभ्यता, यथा पात्रता और भावों की गुणवत्ता हो

विशेष स्तम्भ

7 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
17 राष्ट्रीय परिदृश्य
24 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
27 क्रीड़ा जगत्
29 व्यक्ति परिचय
31 विज्ञान समाचार
34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
35 सारभूत तत्व कोष
38 युवा प्रतिभाएं

लेख

42 प्रतिरक्षा लेख—भारतीय वायु सेना : आसमान में बढ़ती भारत की ताकत
44 विज्ञान लेख—ओजोन क्षरण : धरती पर संकट
46 पर्यावरण लेख—आग का गोला न बन जाए पृथ्वी
47 सामाजिक लेख—अनारक्षित आरक्षण की चुनौतियाँ

हल प्रश्न-पत्र

49 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड लेवल-1 ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2018
57 एस.एस.सी. मल्टी टॉस्किंग (गैर-तकनीकी) स्टॉफ भर्ती परीक्षा, 2017
64 हरियाणा एस.एस.सी. ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2018
69 आर.पी.एफ./आर.पी.एस.एफ. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018
77 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग कनिष्ठ सहायक परीक्षा, 2016
82 उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2018 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)
91 आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग मुख्य परीक्षा, 2018
106 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड एन.टी.पी.सी. (स्नातक) कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
115 कोर्स ऑन कम्प्यूटर कॉन्सेप्ट्स (CCC) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
119 क्या आप परिचित हैं ?
121 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

अभिव्यक्ति में यथा सभ्यता, यथा पात्रता और भावों की गुणवत्ता हो

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

मनुष्य मात्र अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करना चाहता है और अच्छा भी है. उसे बोलना नहीं आता तब भी रोकर अपने भावों को व्यक्त करता है या हँस कर और न केवल मनुष्य, प्रकृति के जर्रे-जर्रे पर अगर हम गौर से दृष्टिपात करें, तो हमें पता लगेगा कि यहाँ हर प्राणी अपने आपको अभिव्यक्त कर रहा है. हाँ सबकी अभिव्यक्ति के ढंग अलग-अलग हो सकते हैं. जैसे—चिड़ियाँ चीं-चीं करके, कबूतर गुटरगूं करके, तोते अपनी आवाज में, कोयल अपनी आवाज में, तो कौए अपनी आवाज में, हर किसी के पास खुद को व्यक्त करने का एक अलग ही अन्दाज है और ये अभिव्यक्ति मनुष्य को, प्राणीमात्र को, उनकी चेतना को विस्तृत करती है. उनकी चेतन्यता को दूसरे तक प्रवाहित करती है और लोग उस चेतन्यता के सागर में एक-दूसरे से अभिव्यक्त करते हुए एक-दूसरे के करीब आते हैं.

बड़े गजब की बात यह है कि अभिव्यक्ति जहाँ प्राणियों को परस्पर करीब लाती है. वहीं अभिव्यक्ति कई बार प्राणियों के मध्य कलह और क्लेश का कारण भी बन जाती है. हम देखें कि परिवारों में जो भी लड़ाइयाँ होती हैं. सन्त समाज में जो भी एक-दूसरे के प्रति बैर-विरोध होता है. कलह-क्लेश होता है उन सबके पीछे भी एक बहुत बड़ा कारण होता है अभिव्यक्ति. लोग बोल गए, लेकिन कब बोलना था, क्या बोलना था और कैसे बोलना था इस बात का उन्होंने विवेक नहीं रखा और इस कारण से पूरे समाज में टूटन हो गयी. टूट-फूट हो गयी. भाई-भाई अलग-अलग हो गए. कई बार पिता-पुत्र, माँ-बेटा, पति-पत्नी जो एकदम करीबी रिश्तेदार हैं. परस्पर प्यार से बंधित हैं. एक-दूसरे से सुन्दर शब्दों की अभिव्यक्ति से बंधे थे वे ही आज कुछ इस भाँति अभिव्यक्त करने लग गए कि एक-दूसरे से दूर हट गए.

अभिव्यक्ति कैसी होनी चाहिए ? आत्म-ज्ञानी पूज्य विराट गुरुजी ने इस पर भी बहुत सा प्रकाश डाला और उन्होंने कहा कि ''अभिव्यक्ति में यथा सभ्यता हो, यथा पात्रता हो और अभिव्यक्ति में भावों की गुणवत्ता हो यानी अभिव्यक्ति में तीन विशेषताएँ होनी चाहिए— यथा सभ्यता, यथा पात्रता और भाव गुणवत्ता.'' यथा सभ्यता का मतलब है कि जहाँ जैसी सभ्यता है. उस सभ्यता के विवेक से बोला जाना चाहिए. जहाँ जिस तरह की संस्कृति है. जिस तरह की भाषा का प्रयोग होता है. आप वहाँ वैसी ही भाषा का प्रयोग करो. अगर उसके विरोध में जाकर अपनी बात कहोगे, तो दूसरे लोगों के मन में अपने प्रति दुर्भावनाएं पैदा करवा लोगे और फिर वे दुर्भावनाएं, बद्दुआएँ आपको परेशान करेंगी, प्रताड़ित करेंगी इसीलिए यथा सभ्यता से बोलो, सभ्यता का अर्थ संस्कृति का लिहाज भी है. सभ्यता का अर्थ सभा का विवेक भी है जैसे—राम का नाम सत्य है, किन्तु जब लोग श्मशान की ओर जाते हैं, तो सब बोलते हैं राम नाम सत्य है. अब यही बात अगर हम किसी शादी के माहौल में बोल दें, तो गलत हो जाएगा और माहौल पूरी तरह बिगड़ जाएगा. पात्र देख करके बोलो जो गम्भीर पात्र हैं वहाँ अपने हृदय की बात को बोलो. जो आपको उचित सलाह दे सकता है उसके पास अपनी बात रखो, अपनी समस्या रखो और मार्गदर्शन पाओ, लेकिन जो आपको सलाह देने की क्षमता नहीं रखता है, बल्कि हर वक्त नकारात्मक ही बोलता है वहाँ पर अपनी बातें अपने हृदय की कुंडियाँ मत खोलो, अन्यथा आप अपने दो दुःख कहोगे और दो दुःखों को मोल ले लोगे. इसीलिए पात्र देखकर के बोलना बहुत जरूरी है. तीसरी बात अभिव्यक्ति में, उत्तम अभिव्यक्ति में ध्यान में रखने योग्य जो पूज्य विराट गुरुजी ने बताई वह भावों में गुणवत्ता हो, यानी आप जो भी बात कहो उसको बहुत सोच समझकर, बहुत अच्छे से गुणों से भावित करके कहो. यानी कथन के कहने में आदर भाव होना चाहिए. कथन का प्रस्तुतीकरण ऐसा होना चाहिए कि सामने वाले के हृदय के भावों की गुणवत्ता को बढ़ाए, जैसे—एक उदाहरण आता है कि एक महाकवि हुआ. उस महाकवि को लगा कि अब मेरी मृत्यु आने वाली है और मेरा ये लेखन कार्य जो मैं साहित्य लिख रहा हूँ. वह अधूरा रह जायेगा, तो मैं अपने दो पुत्रों में से किसे ये कार्य सौंप करके जाऊँ, तो कादम्बरी के रचयिता बाणभट्ट की शायद ये घटना हो और उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को एक-एक वाक्य दिया कि इस वाक्य को जरा संस्कृत में अनुवाद करके लाओ : हिन्दी में वह वाक्य था कि 'सामने सूखा पेड़ खड़ा है.' इसको संस्कृत में लिखना था, तो पहले बेटे ने किया—शिस्कम् ताष्ठम् तिष्ठति अग्रे। यानी सूखा पेड़ सामने खड़ा है. यह बात संस्कृत में सूखा पेड़ सामने खड़ा है. अच्छी तरह से कह दी गई, किन्तु इस बात को सुनने में सामने वाले के मन में कोई रस पैदा हुआ हो ऐसा नहीं है. कुछ आकर्षण आ रहा हो ऐसा नहीं है. दूसरे पुत्र ने भी इसी वाक्य को संस्कृत में प्रस्तुत किया. उसने क्या कहा—निरसस्त तरुवर विलसति पुरतः। अब देखो वही बात है, लेकिन कहने का अंदाज अलग है. उसने कहा निरसस्त तरुवर नीरस है जो तरुवर विलसति पुरतः सामने विलास कर रहा है. मतलब बात को कहने के अलग अन्दाज से सामने वाले के मन में एक साहित्य के प्रति आकर्षण पैदा होता है. बात के प्रति एक भाव पैदा होता है, तो देखो बात कहने के अपने-अपने तरीके हैं. आप कैसे कह सकते हो कई लोग गुस्से में होते हैं तब कह देते हैं. अपनी माँ को माँ कहने की बजाय पिता की पत्नी भी कह देते हैं, लेकिन जब आप माँ को माँ कहते हो, आदरणीय माँ कहते हो, प्यारी माँ कहते हो, तो उस माँ के भीतर में जो प्रेम भाव जाग्रत होता है वह आपकी अभिव्यक्ति की वजह से होता है, तो देखिए आप बातों को कैसे अभिव्यक्त करते हैं. आपकी अभिव्यक्ति सामने वाले के हृदय में प्रेम पैदा कराती है और वह भाव पैदा करवाती है. भक्ति का भाव पैदा करवाती है, सेवा का भाव पैदा करवाती है, एकता का भाव पैदा करवाती है. एक-दूसरे के लिए समर्पण, त्याग का भाव पैदा करवाती है, अथवा हमारी बातें करने की अभिव्यक्ति, हमारे बात करने का अंदाज इसके विपरीत लोगों को हमसे दूर करता है, दुर्भावनाएँ पैदा करवाता है. वातावरण के अंदर टूटन-फूटन पैदा करवाता है. अगर ऐसा है, तो अपने आप को सँभालें, क्योंकि हमारी अभिव्यक्ति ही है, जोकि रिश्तों को जोड़ती है अथवा रिश्तों को तोड़ती है. कहते हैं कि कुछ लोग बोलते हैं और दिल में उतर जाते हैं. कुछ लोग बोलते हैं और दिल से उतर जाते हैं. छोटा-सा फर्क 'में' और 'से' का हमारे बोलने से बहुत बड़ा फर्क ले आता है. इसीलिए अपना बोलना सुधारें, अपनी अभिव्यक्ति सुधारें यथा सभ्यता, यथा पात्रता और भावों की गुणवत्ता, ये तीन तरह की अभिव्यक्ति की विशेषताएँ हमारे भीतर पनपें, तो हमारा जीना सार्थक होगा और हम जहाँ जाएंगे, वहाँ सबके हृदय में आनन्द भाव पैदा करवाएंगे. प्रेम भाव पैदा करवाएंगे, बहुत सारे लोग हमारे मित्र हो जाएंगे.

●●●